प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए
सत्र 9: सबमिशन (5ए)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: छंद चरण: **लूका 14:33**
33 इसलिए तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न करे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के सभी या कुछ हिस्सों को पढ़ें और चर्चा करें* ***– लूका 14***

चरण 4*:* व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

*एक.*इस पाठ में, तुम सीखोगे कि समर्पण आज्ञाकारिता से कहीं अधिक है।

दो. क्या आप देख सकते हैं कि कैसे वाक्यांश "मेरा जूआ ले लो", यीशु हमें मसीह के अधिकार के प्रति समर्पण करने के लिए आमंत्रित करता है - उस पर विश्वास करने के लिए?

*तीन.*हम सीखेंगे कि मसीह द्वारा "घृणा" शब्द का उपयोग उस अधिकार को संदर्भित करता है जिसके प्रति एक व्यक्ति समर्पण करता है, न कि स्वाभाविक स्नेह के लिए।

*चार.*हम एक कहानी पढ़ेंगे जो यह चुनने के गंभीर निहितार्थों को दर्शाती है कि किस अधिकार का पालन करना है - नागरिक अधिकार, पति का अधिकार या मसीह का अधिकार।

पाँच. हम एक "मृत व्यक्ति" होने के निहितार्थ को सीखेंगे, अर्थात्, स्वयं के लिए मर गया और मसीह में और उसके लिए जीवित रहना क्योंकि हम आशीषों के लिए भी सभी अधिकारों को त्याग देते हैं।

चरण 5*: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय 5 ए लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

हर्षित अधीनता एक शिष्य का दूसरा निशान है। समर्पण आज्ञाकारिता से कहीं अधिक है। यह आपके संप्रभु, प्रेमपूर्ण और सर्वज्ञ ईश्वर में विश्वास का एक आंतरिक दृष्टिकोण है। वाट्स में अपने पहले वर्ष के दौरान, मैं तीन किशोर दोस्तों के साथ 103 वीं स्ट्रीट पर चल रहा था। अचानक लोगों में से एक चिल्लाया, "जमीन पर मारो!" एक दूसरे आदमी ने मुझे नीचे धकेल दिया जैसे ही मेरे सिर पर एक गोली चिल्लाई। मैं हिल गया था। जैसे ही मैंने खुद को ब्रश किया, मैंने इन लोगों से पूछा कि वे कैसे जानते थे कि एक गोली चलने वाली थी, खासकर जब से यह हमारे पीछे से आई थी। उनमें से एक ने मुझ पर मुस्कुराया और चुटकी ली, "आपका मतलब है कि आपने यूसीएलए से शिक्षा प्राप्त की है और आप बंदूक के कॉकिंग की आवाज नहीं जानते हैं?" मैं उनकी विशेषज्ञता के लिए आभारी था और तब से, मैं सड़कों पर जीवित रहने में उनके नेतृत्व को प्रस्तुत करने में प्रसन्न था। उन्हें मुझे दो बार कभी कुछ नहीं बताना पड़ा। उनका शब्द कानून था। मैंने उन पर भरोसा किया।

मसीह हमें उस पर भरोसा करने के लिए आमंत्रित करता है: "हे सब थके हुए और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो, और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं मन में कोमल और विनम्र हूं; और तुम अपनी आत्माओं के लिए विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सरल है, और मेरा भार हल्का है" (मत्ती 11:28-30)। "मेरा जूआ ले लो" का अर्थ है मसीह के अधिकार के प्रति समर्पण करना, उस पर भरोसा करना। समर्पण बाकी के लिए पूर्व शर्त है मसीह अपने शिष्यों से वादा करता है। जब मैंने कार चलाना शुरू किया, तो मैंने अनिच्छा से गति सीमा का पालन किया। हालाँकि, कानून का पालन करने के लिए मेरी प्रेरणा भरोसा नहीं थी, बल्कि डर थी। मैं टिकट नहीं लेना चाहता था और जुर्माना और उच्च बीमा दरों का भुगतान

करने के परिणामों का सामना करना चाहता था। राज्य अपने अधिकार के अनुपालन से संतुष्ट था, मेरी प्रेरणा की परवाह किए बिना।

परन्तु मसीह केवल आज्ञाकारिता से प्रसन्न नहीं होता; वह यह भी चाहता है कि उसके शिष्य उसके अधीन रहें—उस पर भरोसा करें। समर्पण और आज्ञाकारिता के बीच एक बड़ा अंतर है। फरीसी अधीनता के बिना आज्ञाकारिता का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रदान करते हैं। उन्होंने उस आत्मा को समझे बिना व्यवस्था के अक्षर का पालन किया जिसके द्वारा परमेश्वर ने इसकी व्याख्या करने का इरादा किया था। उन्होंने परमेश्वर के न्याय पर भरोसा नहीं किया क्योंकि उसके प्रेम की उच्च व्यवस्था उनके लिए विदेशी थी। बाइबल आज्ञाकारिता के बिना समर्पण की घटनाओं को भी दर्ज करती है। यदि मनुष्यों के नियम परमेश्वर के नियमों के साथ संघर्ष करते हैं, तो शिष्य अभी भी परमेश्वर में अपने विश्वास को खुले तौर पर प्रदर्शित करके एक विनम्र भावना बनाए रख सकता है। पतरस और यूहन्ना ने परमेश्वर के प्रति एक विनम्र भावना बनाए रखी, भले ही उन्होंने एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था की अवज्ञा की। जब प्रेरितों पर अधिकार रखने वालों ने उन्हें यीशु के बारे में शिक्षा देना बंद करने की आज्ञा दी, तो उन्होंने आज्ञा मानने से इनकार कर दिया (प्रेरितों के काम 4:18-20)। उन्होंने मसीह के बारे में अपनी शिक्षा को फिर से शुरू किया और ऐसा करने में साहस के लिए प्रार्थना भी की। परमेश्वर के सर्वोच्च अधिकार के प्रति उनके समर्पण के लिए आवश्यक था कि वे अपने लौकिक अधिकारियों की अवज्ञा करें। कृपया ध्यान दें कि पतरस और यूहन्ना ने अपनी अवज्ञा को छिपाया नहीं, बल्कि खुले तौर पर प्रचार किया, परिणामों के साथ परमेश्वर पर भरोसा किया। वे आगे की सजा भुगतने के लिए तैयार थे यदि अधिकारी ऐसा शासन करते थे, यह जानते हुए कि परमेश्वर के प्रति उनकी सार्वजनिक आज्ञाकारिता उसकी महिमा लाएगी। यदि प्रेरितों ने अपराध महसूस किया होता यदि कोई उन्हें वह काम करते हुए "पकड़ा" जाता जो वे सही मानते थे, तो उनके पास विनम्र आत्मा नहीं होती। एक विनम्र आत्मा के साथ किया गया कार्य कोई अपराध नहीं होता है। यदि कोई शिष्य खुले तौर पर परमेश्वर की इच्छा का प्रत्यक्ष पालन करने में लौकिक अधिकारियों की अवज्ञा करता है, जैसे कि दानिय्येल की गैरकानूनी प्रार्थना (दानिय्येल 6:10), और परिणाम भुगतने के लिए तैयार है, तो वह विनम्र है। 1960 के दशक में कई ईसाइयों ने नस्लीय भेदभाव के अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ अहिंसक विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया। वे जानते थे कि सभी मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बने थे और यह गरिमा हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। काले विश्वासी सफेद बस सवारों के लिए आरक्षित सीटों पर अवैध रूप से बैठे और साहसपूर्वक सफेद रेस्तरां में सेवा का अनुरोध किया। उन्होंने एक उच्च कानून का पालन करके खुले तौर पर नागरिक अधिकारियों की अवहेलना की। अपने प्रदर्शनों के दौरान ये ईसाई परमेश्वर के अधीन रहे - अपराध से मुक्त और परिणाम भुगतने के लिए तैयार। एक शिष्य परमेश्वर के अधिकार में विश्वास का दृष्टिकोण बनाए रखने का प्रयास करता है, चाहे कोई भी कीमत क्यों न हो। बाइबिल की चार सच्चाइयाँ इस खोज में उसका मार्गदर्शन करती हैं।

मसीह का अधिकार सर्वोच्च है

यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पास आता है, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों से बैर नहीं रखता है, और यहां तक कि अपने जीवन से भी बैर नहीं रखता है, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। जो कोई अपना क्रूस न उठाकर मेरे पीछे न आए, वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:26,27)। मसीह द्वारा यहाँ घृणा का उपयोग उस अधिकार को संदर्भित करता है जिसके प्रति एक व्यक्ति समर्पण करता है, न कि स्वाभाविक स्नेह के लिए। मसीह के प्रति आपका समर्पण, उस पर आपका विश्वास, इतना महान होना चाहिए कि तुलना करने से परस्पर विरोधी अधिकारियों के प्रति आपकी निष्ठा घृणा के समान है। मसीह के अधिकार के प्रति इतनी पूरी तरह से समर्पण करना किसी के लिए भी अनुचित है, लेकिन एक मृत व्यक्ति के लिए - अर्थात्, जिसने मसीह को अपने जीवन का प्रभु बनाया है। आंतरिक शहर में लोगों को अक्सर परस्पर विरोधी अधिकारियों का सामना करना पड़ता है। हैटी हमारे कई बाइबिल क्लब बच्चों की माँ है। वे अत्यधिक गरीबी में रहते हैं, अक्सर भोजन या पर्याप्त कपड़ों के बिना रहते हैं। जब हमने मसीह के नाम पर इस परिवार की शारीरिक जरूरतों को पूरा किया, तो हैटी यीशु से प्यार करने लगी और उसका अनुसरण करने की उसकी आज्ञा का पालन किया।

Her पति एक "खच्चर" था, जो मेक्सिको से दक्षिणी कैलिफोर्निया तक नशीले पदार्थों का परिवहन करता था। अक्सर, वह हैटी और उनके बच्चों को उसकी सहायता करने के लिए मजबूर करता था। वह हेरोइन का एक पैकेट हैटी के पैर में बांध देता था, उसे उसकी पोशाक के नीचे छिपा देता था। या वह इसे अपने बच्चों को उनके कपड़ों के नीचे जोड़ देता था। उसने अपने परिवार को

पीटने या यहां तक कि मारने की धमकी दी अगर उन्होंने आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। शारीरिक शोषण के डर से प्रेरित होकर, जिसके वे अक्सर शिकार होते थे, उन्होंने आज्ञा का पालन किया। जब हैटी ने मसीह को स्वीकार किया, तो उसे एक गंभीर संकट का सामना करना पड़ा। वह जानती थी कि वह देश के कानून को तोड़कर और अपने बच्चों को खतरे में डालकर परमेश्वर की अवज्ञा कर रही थी। लेकिन अगर उसने अपने पति की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया, तो परिणाम भयानक होंगे। कौन सा अधिकार प्राथमिकता लेता है? उसे किसके अधीन होना चाहिए, मसीह या उसके पति? यीशु ने कोई संदेह नहीं छोड़ा। मसीह का अधिकार सर्वोच्च है (मत्ती 23:10)। इसलिए, अपने और अपने बच्चों के जीवन को जोखिम में डालते हुए, हैटी ने मसीह की आज्ञा का पालन किया, अपना "क्रूस" उठाया और उसका अनुसरण किया।

जब मैं यह समझने के लिए संघर्ष कर रहा था कि परमेश्वर पर भरोसा करने का मेरे लिए क्या मतलब है, लूका 14:33 ने घर पर प्रहार किया: "इसलिए कोई भी मेरा शिष्य नहीं बन सकता जब तक कि वह पहले बैठकर अपनी आशीषों को न गिने—और फिर उन सभी को मेरे लिए त्याग न दे" (एलबी, इटैलिक जोड़ा गया)। जब मैंने अपनी आशीषों को सूचीबद्ध किया, तो वे सभी चीजें जिन्हें मैं प्रिय मानता हूं - मेरी पत्नी, मेरे बच्चे, मेरा काम, मेरा स्वास्थ्य, मेरे दोस्त, मेरी प्रतिष्ठा, मेरा घर- मुझे एहसास हुआ कि इनमें से कोई भी मेरा भगवान हो सकता है। मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि अगर भगवान ने इनमें से एक या सभी को दूर ले जाना चुना, तो मुझे एक वास्तविक संकट का सामना करना पड़ेगा। लेकिन फिर भगवान ने मुझे याद दिलाया कि मैं एक मरा हुआ आदमी था। और एक मरे हुए आदमी के पास कोई संपत्ति नहीं है। मैंने इन आशीषों के सभी अधिकारों को त्याग दिया जब मसीह मेरे जीवन का प्रभु बन गया। अब वह बस उन्हें मुझे उधार दे रहा है। यदि परमेश्वर अपनी दिव्य बुद्धि में इनमें से एक या सभी चीजों को हटाने के लिए चुनता है जिसे मैं बहुत प्रिय मानता हूं, तो मुझे विश्वास है कि वह सबसे अच्छा जानता है और मुझे उसमें प्रसन्न रहना जारी रखने की कृपा देगा। कुछ विश्वासी अपनी आज्ञाकारिता के लिए क्वालिफायर संलग्न करते हैं, जैसे, "मैं आपके लिए कहीं भी जाऊंगा, भगवान-वाट्स को छोड़कर," या "मैं वह सब कुछ करूंगा जो आप पूछेंगे, भगवान- अगर आप गारंटी देते हैं कि मेरी पत्नी को कोई नुकसान नहीं होगा।" इसका वास्तव में मतलब यह है, "मैं कहीं भी नहीं जाऊंगा या कुछ भी नहीं करूंगा, प्रभु—जब तक कि मैं इसे ठीक नहीं करता।" जब भी हम परमेश्वर के प्रति अपनी आज्ञाकारिता पर कोई शर्त लगाते हैं, तो हम उस पर अपने भरोसे को पूरी तरह से नकार देते हैं। परमेश्वर के प्रति समर्पण करने के बारे में कोई भी आरक्षण प्रकट करता है कि हम सोचते हैं कि हम परमेश्वर की तुलना में अपनी बेहतर देखभाल कर सकते हैं, कि परमेश्वर नहीं जानता कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है। कितना मूर्खतापूर्ण है! हर्षित अधीनता से कम कुछ भी परमेश्वर के सर्वोच्च अधिकार, ज्ञान और प्रेम, और हमारी आत्म-मृत्यु से इनकार है।

पीपी 47-51 ए

***चरण 6**: व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करें फिर प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अनुरोधों के लिए प्रार्थना करता है।*

स्रोत: द मेकिंग ऑफ ए डिसाइपल डॉ . कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261011